बुआई हेतु उपयुक्त विधि

बीज की बुआई बहुत ही सावधानीपूर्वक की जानी चाहिए क्योंकि इसका बीज वजन में बहुत हल्का एवं छोटा होता है। बुवाई पूर्व बीजों को पानी में डालकर नीचे डूबे हुए बीज को निकाल कर जर्मिनेशन ट्रे में रेत एवं चारकोल पावडर को बराबर मात्रा में लेकर बीज की बुवाई करना चाहिए।

रोपणी अवस्था में बीमारी एवं बचाव संपर्क

रोपणी अवस्था में पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए खरपतवार की निंदाई एवं नियमित होना चाहिए इसके साथ ही पौधों को पर्याप्त प्रकाश उपलब्ध होना चाहिए। पौधों में किसी भी प्रकार की बीमारी दिखने पर तत्काल फफूंदनाशक दवा बैविस्टीन एवं कीटनाशक दवा एन्डोसल्फॉन अथवा रोगार का एक प्रतिशत सांधता के घोल का छिडकाव सप्ताह में दो बार किया जाना चाहिए एवं पौधों को तत्काल कुछ समय के लिए धूप में रखना अत्यंत आवश्यक होता है। रोपणी में पॉलीथिन की थैलियों को समय-समय पर स्थान परिवर्तित करते रहना अत्यंत आवश्यक होता है इसके साथ ही पौधों को एक दूसरे से टकराने से बचाव करना भी बीमारी फैलने को रोकने के लिए नितांत आवश्यक है। इसके पौधे अतिसंवेदनशील होने के कारण तेज धूप, गर्म हवा, पाला एवं तुषार से बचाने हेतु अतिरिक्त सुरक्षा की आवश्यकता होती है।

पॉटिंग मिश्रण

पौध की अच्छी वृद्धि के लिए पॉलीथिन में रेत + मिट्टी + केंचुआ खाद को क्रमश: (1. 1: 2) एवं मृदा + 40 ग्राम पी. एस. बी. (PSB) लेकर मिश्रण तैयार किया जाना चाहिए।

पॉलीथिन का माप

रोपण के लिए 15x25 सेमी. की पॉलिथिन का उपयोग किया जाना चाहिए।

उपयोग

इसकी उपयोग इमारती लकड़ी की प्राप्ति के लिए किया जाता हैं। इसकी पत्तियों का उपयोग चारे के रूप में पशुओं के लिए किया जाता हैं। इसकी छाल का उपयोग रूक-रूक कर आने वाले बुखार एवं प्रतिविषाक्त (एन्टी सेप्टिक) के रूप में किया जाता है।

संपर्क :

डॉ. अर्चना शर्मा

वरि. वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र)

फोन: (0761) 2666529, 2665540

Amrit Offset # 0761-2413943

(51)

हल्दू

बीज एवं रोपणी तकनीक

(एडाइना कॉर्डीफोलिया)

बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

हल्दू – बीज एवं रोपणी तकनीक

प्रजाति का नाम – हल्दू

वानस्पतिक नाम – एडाइना कॉर्डीफोलिया

परिचय

यह रूबिएसी कुल का पर्णपाती वृक्ष है।

पहचान

यह वृक्ष अपनी धूसर छाल के साथ–साथ छोटी एवं दो पत्तियों के बीच पाए जाने वाले छोटे–छोटे कांटों के कारण पहचाना जाता है। यह वृक्ष लगभग 25 से 30 मीटर ऊँचाई एवं 05 से 06 मीटर गोलाई के होते हैं। इनके फूल हल्के पीले एवं फल गोलाकार कैप्सूलनुमा होते हैं जिनके अंदर कई बीज पाए जाते हैं।

प्राप्ति स्थान

यह दक्षिण भारत में पाया जाता है। लेकिन मुख्यतः यह पूर्वी घाट, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक में पाया जाता है। म.प्र. में यह सिवनी, बालाघाट, छिंदवाड़ा, दमोह, कटनी, आदि जिलों में पाया जाता है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

कछारी, रेतीली, काली, चिकनी लाल दोमट अथवा लेटेराइट मिट्टी में अच्छी वृद्धि करता है।

बीज चक्र

प्रतिवर्ष बीजोत्पादन होता है।

रितुजैविकी (Phenology)

इस वृक्ष में फूल जून से अगस्त के मध्य एवं फल फरवरी से मई के मध्य लगते हैं। इसके बीज का संग्रहण अप्रैल से मई के मध्य किया जाता है।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीजों की संख्या लगभग 11000000 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

बीज की जीवन क्षमता अवधि सामान्य भण्डारण विधि में 6 से 9 माह तक होती है परन्तु सिलिका जैल के साथ बीज को भण्डारित करने पर इसकी जीवन क्षमता अवधि को बढ़ाया जा सकता है।

सुसुप्तावस्था

बीज में किसी भी तरह की सुसुप्तावस्था नहीं पायी जाती है।

अंकुरण क्षमता

बीज की अंकुरण क्षमता 30 से 35 प्रतिशत तक होती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशतता 25 से 30 प्रतिशत तक होती है।

उपयुक्त भंडारण विधि

सिलिका जैल रसायन के साथ वायु रोधक प्लास्टिक जार में मंडारित किया जाना उपयुक्त होता है।

उपयोगिता की अवधि

बीज संग्रहण के 06 माह के अंदर उपयोग कर लेना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

बीज में बुवाई पूर्व किसी उपचार की आवश्यकता नहीं होती है परन्तु बीज को 72 घंटे के लिये ठंडे पानी में भिगोकर लगाने से अंकुरण 55 से 65 प्रतिशत तक प्राप्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम रेत एवं चारकोल पावडर है।

बुआई का समय

बीज की बुवाई मई माह में की जाना चाहिए।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने के लिए 01 ग्राम बीज की आवश्यकता होगी।